INTELLIGENTSIA
International Journal of Multidisciplinary Research
Volume (1), Issue (3)
October- December, 2025
Intelligentsia International Journal Of Multidisciplinary Research

आधुनिक भारतीय नारी चेतना एवं इसके उत्थान मे ब्रह्म समाज की भूमिका –संक्षिप्त साहित्य समीक्षा

प्रगति सागर
शोध छात्रा
इतिहास विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़ (झारखण्ड)

सरांश :
यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथा समकालीन सन्दर्भ में प्रासंगिक विषय है। आधुनिक भारत में नारी जागरण, उसके सामाजिक, शैक्षिक तथा वैचारिक उत्थान की प्रक्रिया में ब्रह्म समाज की भूमिका से सम्बंधित साहित्यों की समीक्षा पर केंद्रित यह लेख विशेष रूप से 19वीं शताब्दी के वर्तमान समय तक ब्रह्म समाज द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए गए प्रयासों जैसे कि बाल विवाह उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा, एवं स्त्रियों के अधिकारों की सामाजिक मान्यता आदि विविध पक्षों में उपलब्ध साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत करता है । साहित्य समीक्षा के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि भारत में नारी शक्ति के उत्थान में ब्रह्म समाज ने निर्णायक भूमिका निभाई है, राजा राम मोहन राय के नेतृत्व में शुरू किए गए सामाजिक सुधार आंदोलन में स्त्री मुक्ति एवं सशक्तिकरण एक केंद्रीय पक्ष के रूप में विद्यमान रहा जिसकी सपष्ट प्रभाव समकालीन समाज में महिलाओं के समाज में पुरुषों के बराबर प्रतिनिधित्व के वकालत में देखा जा सकता है ।

कुंजी शब्द : ब्रह्म समाज, राजा राम मोहन राय, साहित्य समीक्षा

प्रकाशन समयरेखा:
मूल पाण्डुलिपि प्राप्त – 01 अक्टूबर, 2025; सहकर्मी समीक्षण पूर्ण – 03 अक्टूबर, 2025; संशोधित पाण्डुलिपि प्राप्त – 06 अक्टूबर, 2025; स्वीकृत एवं प्रकाशित – 09 अक्टूबर, 2025
अनुशंसित संदर्भ
सागर, पी. (2025). आधुनिक भारतीय नारी चेतना एवं इसके उत्थान मे ब्रह्म समाज की भूमिका –संक्षिप्त साहित्य समीक्षा. इंटेलिजेंटसिया इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 1(3), 28–34 .

परिचय :

महिलाओं से जुड़ा कोई भी प्रश्न वास्तव में समाज की आधी आबादी का प्रश्न है। मानव सभ्यता के इतिहास में महिलाओं का योगदान सदैव महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के विकास में भाग लिया है। स्त्रियाँ समाज का अनावश्यक हिस्सा नहीं है। बल्कि पुरुषों की तरह ही समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उतनी ही अनिवार्य है (मीनी,2022)[1] । किंतु यह भी एक कटु सत्य है कि उन्हें अपने समान अधिकारों के लिए लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ा है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समय के साथ परिवर्तित होती रही है। वैदिक काल में महिलाओं को उच्च सम्मान प्राप्त था। वे शिक्षित थीं, यज्ञों में भाग लेती थीं और समाजिक निर्णयों में उनकी भूमिका थी। इस काल में उन्हें स्वतंत्रता और सम्मान प्राप्त था (कुमार, 2023) [2]। किंतु उत्तर वैदिक काल के बाद महिलाओं की स्थिति में निरंतर गिरावट आती गई। उत्तरवैदिक काल में भारतीय समाज में पुरुष वर्चस्व, विदेशियों के अधिक आगमन, और महिलाओं की शारीरिक तथा जैविक सीमाओं के कारण समाज का महिलाओं के प्रति सामान्य दृष्टिकोण धीरे-धीरे बदल गया। पूरे समाज ने महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से पुरुषों से हीन मानना शुरू कर दिया। पितृसत्तात्मक व्यवस्था उत्तरवैदिक काल में भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता बन गई, और व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में पुरुष वर्चस्व स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। महिलाओं की स्थिति में गिरावट सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र में देखी गई। महिलाओं ने अपनी बौद्धिक स्वतंत्रता और सृजनात्मक शक्ति को खो दिया। बाल विवाह की बुराइयाँ, दहेज प्रथा और संपत्ति के अधिकारों से संबंधित सामाजिक परंपराओं ने उनके जीवन को अत्यंत दुखद बना दिया। विधवाओं के प्रति समाज का दृष्टिकोण भी असंवेदनशील होता गया, और पुनर्विवाह की मनाही ने उन्हें एक तपस्विनी जैसा जीवन जीने के लिए विवश कर दिया (**नागमोनी,** 2018) [3]।

भारतीय इतिहास में मध्यकालीन युग लगभग 500 वर्षों तक फैला हुआ है। इस काल में प्रमुख रूप से मुस्लिम शासकों का इतिहास केंद्र में रहा है। मुस्लिम शासक सबसे पहले योद्धा वर्ग के रूप में भारत आए (**खोजे,** 2023) [4] । भारत में उनका वर्चस्व दिल्ली सल्तनत और मुगल शासन के दो प्रमुख कालों में देखा गया। मध्यकाल आते-आते उनकी स्थिति और भी दयनीय हो गई। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा जैसी अमानवीय परंपराओं ने महिलाओं को शोषण और असमानता के चक्र में और अधिक जकड़ लिया। जिस देश में कहा गया "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता", वहाँ महिलाओं को उनके मौलिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया।

भारत में औपनिवेशिक काल के पूर्व और उसके दौरान महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। सदियों से परंपराओं और रूढ़ियों के नाम पर महिलाओं को दोयम दर्जे का नागरिक बना दिया गया था। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन की कठोरता, शिक्षा से वंचितता, पर्दा प्रथा और संपत्ति अधिकारों का अभाव—ये सभी समस्याएं भारतीय नारी के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी थीं। धार्मिक कट्टरता और सामाजिक असमानताओं के चलते महिलाओं की स्वतंत्रता और गरिमा को गंभीर रूप से बाधित किया गया **(कुमार एवं चक्रवर्ती** 2022) [5]। ऐसे में भारतीय समाज में नारी चेतना का विकास एक लंबी और कठिन प्रक्रिया थी, जिसमें कई सामाजिक-सुधार आंदोलनों की अहम भूमिका रही। रजा राम मोहन राय ने नेतृत्व में स्थापित "ब्रह्म समाज"" उन प्रभावशाली अग्रणी संस्थाओं में एक है जिसने इस दिशा में बहुमूल्य योगदान दिया। ब्रह्म समाज की स्थापना 1828 में राजा राममोहन राय द्वारा की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाना था। यह आंदोलन भारतीय नवजागरण का प्रमुख हिस्सा बना और विशेष रूप से महिलाओं की दशा सुधारने के लिए प्रेरक शक्ति साबित हुआ। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध मुखर होकर आवाज उठाई और इसके उन्मूलन में निर्णायक भूमिका निभाई। उनके प्रयासों से 1829 में ब्रिटिश सरकार ने सती प्रथा

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

को कानूनी रूप से प्रतिबंधित किया। ब्रह्म समाज ने नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया और विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन कर उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का अधिकार दिलाने की दिशा में पहल की **(चौधरी एवं चक्रबर्ती, 1998)** [6] ।

ब्रह्म समाज ने न केवल महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाई, बल्कि उनके सामाजिक योगदान को भी मान्यता दी। इस आंदोलन ने भारतीय समाज में पहली बार यह विचार स्थापित किया कि महिला भी एक स्वतंत्र विचारशील प्राणी है और उसे भी शिक्षा, स्वाभिमान और आत्मनिर्णय का अधिकार है। इसके बाद ईश्वरचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन जैसे समाज सुधारकों ने भी नारी उत्थान की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए (बनर्जी,2006) [7]। ब्रह्म समाज की शिक्षाओं और प्रयासों से प्रेरित होकर अनेक महिला शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए, जिनमें लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। इस प्रकार ब्रह्म समाज भारतीय समाज में आधुनिक नारी चेतना के बीज बोने वाला एक ऐतिहासिक आंदोलन सिद्ध हुआ, जिसने आगे चलकर महिला अधिकारों की व्यापक लड़ाई को दिशा और बल प्रदान किया।

वर्तमान समय में ब्रह्म समाज की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समाज सुधार, नारी सशक्तिकरण, शिक्षा और सामाजिक समरसता जैसे मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। आज भी जाति, लिंग और धर्म के आधार पर भेदभाव और रूढ़ियों का सामना किया जा रहा है। ऐसे में ब्रह्म समाज के सिद्धांत—तर्क, समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय—आज के लोकतांत्रिक भारत में समावेशी समाज के निर्माण के लिए प्रेरक हैं। यह आंदोलन आज भी हमें यह सिखाता है कि सामाजिक सुधार के लिए विचारों की स्वतंत्रता और नैतिक साहस आवश्यक है। वर्तमान समय में ब्रह्म समाज की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समाज सुधार, नारी सशक्तिकरण, शिक्षा और सामाजिक समरसता जैसे मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। आज भी जाति, लिंग और धर्म के आधार पर भेदभाव और रूढ़ियों का सामना किया जा रहा है। ऐसे में ब्रह्म समाज के सिद्धांत—तर्क, समानता, शिक्षा और सामाजिक न्याय—आज के लोकतांत्रिक भारत में समावेशी समाज के निर्माण के लिए प्रेरक हैं। यह आंदोलन आज भी हमें यह सिखाता है कि सामाजिक सुधार के लिए विचारों की स्वतंत्रता और नैतिक साहस आवश्यक है। हालाँकि आधुनिक युग में समाज में जागरूकता बढ़ी है, शिक्षा और कानूनों के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी उन्हें पूर्ण समानता और सम्मान दिलाने के लिए अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

संक्षिप्त साहित्य समीक्षा:

साहित्य समीक्षा किसी भी शोध कार्य का मूल आधार होती है, क्योंकि यह संबंधित विषय पर पूर्व में हुए कार्यों की समग्र जानकारी प्रदान करती है। इसके माध्यम से शोधकर्ता यह समझ पाता है कि अध्ययन क्षेत्र में अब तक क्या-क्या कार्य हो चुके हैं, किन-किन विद्वानों ने किस दृष्टिकोण से विषय का विश्लेषण किया है तथा अभी कौन-कौन से पक्ष अनुसंधान की दृष्टि से शेष हैं। साहित्य समीक्षा न केवल शोध की दिशा तय करती है, बल्कि शोध विषय की नवीनता और प्रासंगिकता को भी प्रमाणित करती है। यह शोधकर्ता को उपयुक्त शोध पद्धति, अवधारणात्मक ढाँचा तथा स्रोत-सामग्री के चयन में मार्गदर्शन प्रदान करती है। साथ ही, यह पूर्ववर्ती शोधों की सीमाओं को समझने का अवसर देती है, जिससे वर्तमान शोध अधिक वस्तुनिष्ठ और सार्थक बनता है। इस प्रकार, साहित्य समीक्षा एक मजबूत बौद्धिक आधार निर्मित कर शोध को गुणवत्तापूर्ण और दिशा-निर्देशित बनाती है। प्रस्तावित शोध विषय एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं ने इसके विविध पक्षों पर अपने विचार रखें जो इस प्रकार है

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

- **रॉय (1818)[8]** -ब्रह्म समाज के प्रणेता एवं वैचारिक आधारपुरुष द्वारा प्रस्तुत पुस्तक *'ट्रांसलेशन ऑफ अ कॉन्फ्रेंस बिटवीन एन एडवोकेट एंड एन ऑपोनेंट ऑफ द प्रैक्टिस ऑफ बर्निंग विडोज अलाइव: फ्रॉम द ओरिजिनल बंगाल'* सती प्रथा के खिलाफ भारत के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साहित्य है। इस साहित्य में सती प्रथा की अमानवीयता और इसे खत्म करने के प्रयासों के साथ तत्समय समाज सुधार की प्रयासों को व्यापक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है । इस पुस्तक में राजा राम मोहन राय ने स्पष्ट किया है कि सती प्रथा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक किसी भी रूप मानवीय नहीं था। राजा राम मोहन रॉय की यह रचनात्मक कृति भारतीय समाज में महिलाओं के अधिकार एवं इनकी स्थिति को स्थापित करने महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान किया जो समकालीन परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है ।
- **थारक्कनऔर थारक्कन (1975) [9]-** ने अपने एक शोध में भारत में महिलाओं की ऐतिहासिक स्थिति का अध्ययन किया । इस अध्ययन का मुख्य लक्ष्य प्राचीन से आधुनिक काल तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति को समझना था। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि प्राचीन काल में महिलाओं को सिमित अधिकार प्राप्त थें जो मध्यकाल आते –आते न सिर्फ कम हुई बल्कि सामान्य मानवीय अधिकारों से भी वंचित हो गई । यद्यपि औपनिवेशिक काल में भारत अग्रेंजी हुकूमत के अधीन था किंतु सामाजिक एवं धार्मिक - पुनःपरिवर्तनवादी सुधारों से महिलाओं के स्थिति बेहतर हुई। शिक्षा और कानूनों ने महिलाओं को मजबूत किया। यह अध्ययन महिलाओं के अधिकारों के विकास को समझने में मदद करता है ।
- **भट्टाचार्यऔर भट्टाचार्य (1986) [10]-** ने अपने एक अत्यंत महत्वपूर्ण शोध कार्य में 1816-1850 के बीच बंगाली पत्रिकाओं में सामाजिक लेखों का ऐतिहासिक विश्लेषण किया है। इसका उद्देश्य उस समय के सामाजिक सुधारों, खासकर महिलाओं से जुड़े मुद्दों, को जानना था। अध्ययन में पाया गया कि इन पत्रिकाओं ने सती, विधवा विवाह और शिक्षा जैसे विषयों पर लिखा। ये लेख समाज को जागरूक करने में सहायक थे। यह शोध बताता है कि बंगाली पत्रिकाओं ने आधुनिक भारत के सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह सामाजिक इतिहास के लिए उपयोगी स्रोत है।
- **बासु (1991) [11]-** द्वारा किया गया एक शोध कार्य जिसका शीर्षक 'वीमेन्स हिस्ट्री इन इंडिया: एन हिस्टोरियोग्राफिकल सर्वे' है इतिहास के विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं इतिहासकारों के लिए जो भारत में महिलाओं की स्थिति के अध्ययन पर रूचि रखतें हैं के लिए एक मत्वपूर्ण ऐतिहासिक साहित्य है जो यह समझाने का प्रयास किया है कि महिलाओं का इतिहास कैसे लिखा गया और इसमें क्या कमियां रही हैं। इस शोध यह स्पष्ट किया गया है कि इतिहास में पुरुषों पर ज्यादा ध्यान रहा, और महिलाओं की भूमिका को कम आंका गया।
- **रॉय (1999)[12]-** ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के द्वारा 'द एसेंशियल राइटिंग्स ऑफ राजा राममोहन राय' शीर्षक से प्रकाशित यह पुस्तक राजा राममोहन राय के प्रमुख लेखों का संग्रह है। जिसमे उनके सुधारवादी विचारों, खासकर सती प्रथा और महिलाओं के अधिकारों, को प्रस्तुत किया गया है। महिला मुक्ति एवं उत्थान की दिशा में राज राम मोहन राय के विचारों एवं प्रयासों को भी इस अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इस अध्ययन के समीक्षा से स्पष्ट है कि सती प्रथा को खत्म करने और विधवा विवाह को बढ़ावा देने की मांग और इसे असली जामा पहनाने में रॉय सबसे बड़े नेतृत्वकर्ता थे। उनके लेख बताते हैं कि शिक्षा और धार्मिक सुधार महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जरूरी हैं।
- **रमन (2009) [13]-** ने अपने एक अध्ययन में भारत में महिलाओं के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास का विश्लेषण किया है। अपने इस अध्ययन में इन्होने बताया है कि प्राचीन काल में महिलाओं को कुछ स्वतंत्रता थी, लेकिन मध्यकाल में पाबंदियां बढ़ीं। औपनिवेशिक सुधारों ने उनकी स्थिति को बेहतर किया। यह पुस्तक महिलाओं के इतिहास को व्यापक रूप से प्रस्तुत करती है और सामाजिक बदलाव को समझने में मदद करती है। यह महिलाओं के योगदान को उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य है।

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

- **सरकार (2012)[14]-** का एक शोध औपनिवेशिक बंगाल में विधवा मुक्ति पर बहस का अध्ययन करता है । इसका उद्देश्य धार्मिक और कानूनी दृष्टिकोण से विधवा विवाह और अधिकारों को समझना था। अध्ययन में पाया गया कि इस संदर्भ में सुधारवादी और रूढ़िवादी विचारों में टकराव था। सुधारकों ने विधवाओं के लिए शिक्षा और विवाह का समर्थन किया, जबकि रूढ़िवादियों ने परंपराओं को बचाने के लिए इस विरोध । इस काल में कानूनी सुधारों से महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ, लेकिन सामाजिक स्तर पर सोंच में वह बदलाव न आ सका जो अपेक्षित था ।
- **कोप्फ (2015) [15]-** ब्रह्म समाज के सामाजिक सुधारों पर केंद्रित एक ऐतिहासिक शोध में ब्रह्म समाज ने आधुनिक भारत को कैसे प्रभावित किया पर एक व्यापक अंतर्दृष्टि रखने का प्रयास करता है , खासकर महिलाओं के मुद्दों पर। शोध यह रेखांकित किया गया है कि ब्रह्म समाज ने महिलाओं से जुड़ी चिंतनीय विषयों जैसे - सती प्रथा, विधवा विवाह और शिक्षा पर न सिर्फ काम किया बल्कि आधुनिक भारत में स्त्री विमर्श, नारी चेतना एवं इसके उत्थान की आधारशिला राखी । इसने समाज में प्रगतिशील विचारों को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाई जो आज भी जारी है ।
- **परंतमण एवं अन्य (2019) [16] –** ने भारत में महिलाओं की ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए बताया कि प्राचीन से आधुनिक काल तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक जैसी नहीं रही है । कई सामाजिक, आर्थिक , सांस्कृतिक, धार्मिक एवं तत्कालीन कारण रहें है जी स्त्री चेतना एवं उत्थान को प्रभावित करते रहें हैं । वैदिक कालीन समाज स्त्रियों के एक स्वर्णिम काल था यद्यपि भारतीय इतिहास के हर काल-खंड में सशक्त महिलाओं के उदहारण मिलते हैं परन्तु उत्तरवैदिक काल एवं मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति सबसे नाजुक दौर से गुजर रही थी। औपनिवेशिक और स्वतंत्र भारत में सुधारों से महिलाओं की स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया है किंतु अभी भी महिलाओं को उस जड़ मानसिकता से संघर्ष करना पड़ रहा है जो किसी न किसी रूप में पुरुष प्रधान है। शोध यह भी कहता है कि लैंगिक समानता आज भी भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण चिंता है इसके लिए और भी प्रयास की आवश्यकता ।
- **मलिक(2019) [17]-** का शोध भारत में महिलाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य विभिन्न कालखंडों में महिलाओं के अधिकारों को समझना था। शोध में पाया गया कि प्राचीन काल में महिलाओं को सम्मान था, लेकिन मध्यकाल में पितृसत्तात्मक नियमों ने उनकी स्वतंत्रता छीनी। औपनिवेशिक सुधारों और स्वतंत्रता के बाद कानूनों ने स्थिति बेहतर की। यह अध्ययन बताता है कि शिक्षा और जागरूकता ने महिलाओं को सशक्त किया, लेकिन समानता के लिए और काम जरूरी है।
- **कुमार (2017) [18]-** ने अपने एक शोध में भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रयासों की समीक्षात्मक अध्ययन किया और बताया है कि इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं की वर्तमान भारत में महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष संवैधानिक अधिकार मिलें हैं, इनके अधिकारों के रक्षा के लिए विधान बनाए गए हैं, कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं, आरक्षण, वित्तीय सहायता जैसे विशेष प्रोत्साहन के उपाय किए जा रहें हैं जिसके सकारात्मक परिणाम भी मिलें हैं और मिल रहें किंतु अभी भी महिलाओं के प्रति हिंसा के मामले, लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा, यौन शोषण एवं वह मानसिकता जो सीधे –सीधे महिलाओं को पुरुषों के अधीन बनाती है बनी हुई है। इसके सबसे जरुरी है इन समस्याओं के जड़ कारणों को समाप्त करना, इसके लिए महिलाओं की शिक्षा के लिए अधिकतम निवेश एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने हेतु प्रयास महत्वपूर्ण हस्तक्षेप होंगे

निष्कर्ष :

यह साहित्य समीक्षा समग्र रूप से यह दर्शाती है कि भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति, अधिकारों और भूमिका का इतिहास एक रेखीय प्रक्रिया नहीं रहा, बल्कि यह निरंतर उतार-चढ़ाव, संघर्ष और परिवर्तन से गुजरता रहा है। प्राचीन काल में जहाँ स्त्रियों को सम्मान एवं अपेक्षाकृत स्वतंत्रता प्राप्त थी, वहीं उत्तरवैदिक और मध्यकालीन समाज में उनकी स्थिति अत्यंत सीमित और दयनीय हो गई। औपनिवेशिक काल सामाजिक-धार्मिक

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

सुधारों और विधायी हस्तक्षेपों के कारण स्त्रियों के अधिकारों एवं शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसरों का द्वार खोलने वाला साबित हुआ। राजा राम मोहन राय जैसे सुधारकों के प्रयासों ने सती प्रथा जैसी अमानवीय परंपराओं को समाप्त करने और विधवा विवाह, शिक्षा एवं स्त्री अधिकारों के लिए नई चेतना जगाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।बंगाली पत्रिकाओं एवं ब्रह्म समाज जैसे आंदोलनों ने स्त्री विमर्श और नारी चेतना की आधारशिला रखी, जिसने आधुनिक भारत में स्त्रियों की स्थिति सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। औपनिवेशिक और स्वतंत्र भारत के कानूनों, नीतियों एवं कल्याणकारी योजनाओं ने महिलाओं के अधिकारों को संरक्षित करने और सशक्त बनाने का प्रयास किया। तथापि, अनेक अध्ययनों ने यह भी स्पष्ट किया है कि सामाजिक मानसिकता, पितृसत्तात्मक संरचनाएँ और लैंगिक भेदभाव जैसे गहरे निहित अवरोध आज भी महिलाओं की पूर्ण समानता और स्वतंत्रता के मार्ग में बाधक बने हुए हैं। अतः इस साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की यात्रा अभी अधूरी है। शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, कानूनी सुरक्षा और सामाजिक चेतना के सतत प्रयासों से ही स्त्रियों को वास्तविक समानता और सम्मान प्राप्त हो सकता है। यह साहित्यिक विवेचना इस बात को रेखांकित करती है कि अतीत से वर्तमान तक का यह विमर्श न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि समकालीन भारतीय समाज में लैंगिक न्याय और समानता की दिशा में भविष्य के प्रयासों के लिए भी मार्गदर्शक है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, आर. (2023). *भारतीय समाज में आधुनिक नारी की स्थिति.* आई.जे.एन.आर.डी., 8(6),पृष्ठ संख्या : 758-762।
2. मीनी,ए.आर. (2022).नारी चेतना नई दिशा की ओर.अनुकर्ष पत्रिका, पृष्ठ संख्या: 40-43।
3. **नागमोनी, पी.एस.** (2018). कंडीशन ऑफ इंडियन वीमेन इन पोस्ट-वैदिक पीरियड. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज, 8(1), पृष्ठ संख्या : 32-36।
4. **खोजे, एन.** (2023). स्टेटस ऑफ इंडियन वीमेन इन एन्शिएंट, मेडीवल एंड मॉडर्न एरा. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च, 8(4), पृष्ठ संख्या : 11–14।.
5. **कुमार, जी., एंड चक्रवर्ती, एस.** (2022). स्टेटस ऑफ इंडियन वीमेन इन कोलोनियल पीरियड. एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, 13(3), पृष्ठ संख्या : 159–161।
6. **चौधरी, एस., एंड चक्रबर्ती, एस.** (1998). एमांसिपेशन ऑफ वीमेन: अ नोट ऑन द ब्रह्मो समाज मूवमेंट इन शिलांग. सोशल मूवमेंट्स इन नॉर्थ-ईस्ट इंडिया, पृष्ठ संख्या : 96 ।
7. **बनर्जी, डी.** (2006). ब्रह्मो समाज एंड नॉर्थ-ईस्ट इंडिया. आनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स. पृष्ठ संख्या : 29-147।
8. रॉय, आर. (1818). *ट्रांसलेशन ऑफ अ कॉन्फ्रेंस बिटवीन एन एडवोकेट एंड एन ऑपोनेंट ऑफ द प्रैक्टिस ऑफ बर्निंग विडोज अलाइव: फ्रॉम द ओरिजिनल बंगाल.* बैप्टिस्ट मिशन प्रेस. पृष्ठ संख्या :
9. ठारक्कन, एस.एम., और ठारक्कन, एम. (1975). स्टेटस ऑफ वुमन इन इंडिया: ए हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव. सोशल साइंटिस्ट, पृष्ठ संख्या : 115-123.
10. भट्टाचार्य, डी., और भट्टाचार्य, ए. (1986, जनवरी). ग्लिप्सेस ऑफ़ सोशियोलॉजिकल राइटिंग्स इन बेंगाली पीरियोडिकल्स 1816-1850. इन प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस. इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस. (47). पृष्ठ संख्या : 579-590
11. बसु, ए. (1991). वीमेन्स हिस्ट्री इन इंडिया: एन हिस्टोरियोग्राफिकल सर्वे. इन राइटिंग वीमेन्स हिस्ट्री: इंटरनेशनल पर्सपेक्टिव्स. पालग्रेव मैकमिलन, लंदन, यूके. पृष्ठ संख्या : 181-209

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved

12. **रॉय, आर.आर.** (1999). द एसेंशियल राइटिंग्स ऑफ राजा राममोहन राय. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृष्ठ संख्या : 299
13. रमन, एस.ए. (2009). वीमेन इन इंडिया: ए सोशल एंड कल्चरल हिस्ट्री [2 वॉल्यूम्स]. ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग यूएसए. पृष्ठ संख्या : 189
14. सरकार, टी. (2012). समथिंग लाइक राइट्स? फेथ, लॉ एंड विडो इमोलेशन डिबेट्स इन कोलोनियल बंगाल. द इंडियन इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री रिव्यू, 49(3), पृष्ठ संख्या : 295-320.
15. **कोफ्फ, डी.** (2015). द ब्रह्मो समाज एंड द शेपिंग ऑफ द मॉडर्न इंडियन माइंड. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
16. परांतमन, जी., संथी, एस., राधा, आर., और पूर्णिमा तिलगम, जी. (2019). इंडियन वुमेन स्टेटस: ए हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव. मुआलिम जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, पृष्ठ संख्या : 258-266
17. मल्लिक, पी.एस. (2019, मार्च). सोशियो-कल्चरल स्टेटस ऑफ वुमेन इन इंडिया: ए हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव. रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, 4(3), पृष्ठ संख्या : 1524.
18. कुमार,आर (2017).महिला सशक्तिकरण में शिक्षा :समस्याएं एवं समाधान, कुमार,आर, विश्वकर्मा, वी.के. एवं प्रसाद,एस.के द्वारा सम्पादित. भारत में समावेशी शिक्षा : वर्तमान स्थिति चुनौतियां एवं समाधान. विक्टोरियस पब्लिशर्स (इंडिया) पृष्ठ संख्या : 158-168.

Copyright © IIJMR 2025, All rights reserved